# राष्टीय कुमाउनी भाषा महोत्सव **(7,8 एवं 9 नवम्बर 2026)**

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान उधम सिंह नगर में दिनांक 7,8 एवं 9 नवंबर 2025 को राष्ट्रीय कुमाऊं भाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल एवं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री मा० श्री भगत सिंह कोश्यारी जी थे। कार्यक्रम में देश भर के विद्वानों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में कविता पाठ, गीत प्रस्तुति, पुस्तक वाचन आदि गतिविधियां की गई थी। इस अवसर पर कुमाऊनी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

अमर उजाला | रुद्रपुर-काशीपुर | amarujala.com

# जो बोली म्यर दद्यू बोली, जो बोली म्यर माई...

## तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में उठी कुमाऊंनी भाषा को राज्य की द्वितीय राजभाषा घोषित करने की मांग

संवाद न्यूज एजेंसी

रुद्रपुर। 17वें राष्ट्रीय कुमाऊंनी भाषा सम्मेलन का समापन हो गया। इस मौके पर सामूहिक रूप से कुमाऊंनी पंक्तियां जो बोली म्यर दद्यू बोली, जो बोली म्यर माई और तिनके बिना सुनी लागे... गूंजी। सभी ने एकस्वर में कुमाऊंनी भाषा को राज्य की द्वितीय राजभाषा घोषित करने और कक्षा एक से पांच तक इसे वैकल्पिक विषय के रूप में जोड़ने की आवाज बुलंद की।

डायट में रविवार को समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. डीएस बिष्ट (पूर्व कुलपति, जीबी पंत विवि) ने कहा कि कुमाऊंनी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पीढ़ियों की स्मृति, लोकज्ञान व भावनाओं की थाती है।

मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश व राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रफुल्ल चंद्र पंत ने कहा उत्तराखंड की आत्मा हमारी मातृभाषाओं में बसती है। सरकार को इन भाषाओं को केवल सांस्कृतिक नहीं, बल्कि प्रशासनिक व शैक्षणिक स्तर पर मान्यता देनी चाहिए। सुझाव दिया कि कुमाऊंनी भाषा की व्याकरणिक संरचना व मानक शब्दावली तैयार करने के लिए संयुक्त समिति का गठन किया जाए।

समापन दिवस पर प्रस्तुत रिपोर्ट में ... आदि रहे।

रुद्रपुर डायट में आयोजित सम्मेलन में सम्मानित अतिथि। स्रोत : आयोजक

### सरकार से की गई प्रमुख मांगें

# कुमाऊंनी बोली को 8वीं अनुसूची में शामिल करने का प्रयास : कोश्यारी

**जागरण संवाददाता, रुद्रपुर :** कुमाऊंनी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने और भाषा को मान्यता देने की मांग राज्य गठन के बाद से ही होती आ रही है, लेकिन अब तक यह पूरी नहीं हो सकी है। जिसे देखते हुए उत्तराखंड भाषा संस्थान, कुमाऊनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति ने आवाज उठाई, जो अब सम्मेलन के रूप में गतिमान है। इसके 17वें राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल एवं पूर्व सीएम भगत सिंह कोश्यारी के समक्ष भी यही मांग उठी। कोश्यारी ने समिति पदाधिकारियों से इस पर विस्तृत प्रस्ताव मांगा। उन्होंने कहा कि इस मामले को सरकार के समक्ष रखेंगे।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में शनिवार से तीन दिवसीय 17वीं राष्ट्रीय कुमाऊंनी भाषा सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। प्रदेश के साथ ही बाहरी राज्यों से भी प्रवासी प्रबुद्ध लोग इसमें पहुंचे हैं। सम्मेलन के मुख्य अतिथि पूर्व सीएम कोश्यारी ने इसका शुभारंभ किया। कहा कि कुमाऊंनी बोली, अवधी बोली सहित अन्य बोलियों की तरह समृद्ध है। बोलने वालों की संख्या लाखों और करोड़ से कम हो सकती है, लेकिन जो साहित्य है, वह भी कुमाऊंनी में प्रसिद्ध है।

राष्ट्रीय कुमाऊंनी भाषा सम्मेलन में बोलते पूर्व सीएम भगत सिंह कोश्यारी ● जागरण

# आपरेश

संस, जागरण, चौखुटिया
चिकित्सकों समेत स
मुहैया कराने की मांग
रहा आपरेशन स्वास्
मौके पर आंदोलनका
का एलान किया।

शुक्रवार को भी स
आंदोलन स्थल पर स
के विरुद्ध आवाज
मांगों को जल्द धरा
तो आगे आंदोलन क
वक्ताओं ने सभी
बैनर तले एकजुट ह
आरती घाट पर
स्वास्थ्य आंदोलन
रहा। भूख हड़ताल
के अनशन का
की श्रृंखला को ज
जगदीश नायक,
सिंह भेलवाल ने
की। जिन्हें नारे

# आठवीं अनुसूची में शामिल हो कुमाऊंनी भाषा

## डायट में शुरू हुआ राष्ट्रीय कुमाऊंनी भाषा सम्मेलन

रुद्रपुर। राष्ट्रीय कुमाऊंनी भाषा सम्मेलन का शुभारंभ रुद्रपुर में हुआ। इसका उद्घाटन पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने दीप जलाकर किया। इसमें उनके साथ साहित्यकार कौस्तुभानंद चंदोला, प्रो. बहादुर सिंह बिष्ट, प्रो. वीरेंद्र सिंह बिष्ट, डॉ. एलएम उप्रेती व दयानंद आर्य रहे। इस दौरान कुमाऊंनी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग उठी।

कार्यक्रम में पहरू पत्रिका के पूर्व संपादक और उत्तराखंड भाषा संस्थान के सदस्य डॉ. हयात सिंह रावत ने कहा कि 1728 में रामभद्र त्रिपाठी ने कुमाऊंनी में चाणक्य नीति का अनुवाद किया था। 1810 से गुमानी पंत से आज तक कुमाऊंनी भाषा में साहित्य लगातार कुमाऊंनी में लिखा जा रहा है।

आज कुमाऊंनी में साहित्य लगभग सभी विधाओं में साहित्य लिखा जा रहा है। कुमाऊंनी लेखक ब्रिगेडियर धीरेश जोशी ने कुमाऊंनी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की जरूरत बताई।

दूसरे सत्र में कुमाऊंनी भाषा, संस्कृति, कला, रंगमंच, फिल्म आदि पर पैनल चर्चा हुई। इसमें चारु तिवारी ने भाषा व संस्कृति, मीरा जोशी ने ऐपण, घनश्याम भट्ट ने अभिनय, मनोज चंदोला ने फिल्म, केएन पांडे खिमदा ने कुमाऊंनी रंगमंच, गोपाल चम्याल ने कुमाऊंनी संगीत पर अपनी राय रखी। इस दौरान कई किताबों का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में कुमाऊं मीरा जोशी को वैद्य कल्याण सिंह बिष्ट कुमाऊंनी संस्कृति सेवी सम्मान, घनश्याम भट्ट, गोपाल चम्याल, ललित मोहन सिंह जीना, गिरीश चंद्र जोशी, कुबेर सिंह कड़ाकोटी को कुमाऊंनी भाषा, संस्कृति और साहित्य में योगदान के लिए सम्मानित और पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर दिल्ली से केएन पांडेय खिमदा, चारु तिवारी, फरीदाबाद से रमेश सोनी, बागेश्वर से किशन मलड़ा, डॉ. दीपा कांडपाल. महेंद्र ठकुराठी, भास्कर नेगी, माया रावत, रमेश प्रकाश पर्वतीय, प्रवीण प्रकाश आदि उपस्थित रहे। संवाद

खरीदें
स्मृति पराग
किस्साणा